

न्धर्वेषां विवाहेन मामुपैहि वराङ्गने MBh. 1, 6577. — 2) antreten, sich  
hingegeben: प्रशममुपैहि MBh. 1, 1258. आत्मीभावमुपैहि BHART. 3, 64.

— अग्र्याया zu Jmd hingehen: तमिह शरणमग्र्यायै R. 6, 9, 39.

— न्यां hineingerathen in (einen Zustand): अत्रत्यं न्येत्य BṚH. ĀR. UP.

4, 4, 1.

— निरा abgehen; aus dem Wege gehen: (गर्भः) निरेतु दर्शमास्यः RV. 5,  
78, 7, 9. निरेहि सोम 10, 124, 6. अहं निरेतु ते विषम् AV. 4, 4, 21, 22.

— पर्या 1) umwandeln ÇAT. Br. 8, 7, 2, 5. — 2) umkehren, wiederkeh-  
ren: सा ह वागुच्चक्राम सा संवत्सरं प्रेष्य पर्येत्योवाच KHAND. UP. 5, 1, 8.

— अनुपर्या der Länge nach umwandeln ÇAT. Br. 7, 5, 1, 37. 8, 7, 2, 4.

13. ऊष्मा प्रकुपितः काये तीव्रवायुसमीरितः । शरीरमनुपर्येत्य सर्वान्प्रा-  
णान्नुपाडि वै ॥ MBh. 14, 468.

— अभिपर्या umwandeln (von der Zeit), für Jmd verstreichen; mit dem  
acc.: तं नानीजानं पुनः पात्सुगुनी पौर्णमास्यभिपर्येयात् ÇAT. Br. 2, 6, 2, 12.

— प्रत्या wiederkommen, zurückkehren zu (acc.): प्रत्यायत्यां रात्रौ ÇAT.  
Br. 2, 3, 4, 2. 6, 7, 4, 14. 7, 2, 1, 18. नैनमेते रश्मयः प्रत्यायन्ति 14, 8, 6, 3 (=   
BṚH. ĀR. UP. 5, 5, 2). KĀT. ÇR. 6, 8, 21. 8, 2, 9. अरण्यं गत्वा न प्रत्येयात्  
21, 1, 17. स ह तत्तान्विष्य नाविदमिति प्रत्येयाय KHAND. UP. 4, 1, 7. प्रत्येत्य  
नगरम् MBh. 3, 2744.

— अभिप्रत्या dass. ÇAT. Br. 6, 7, 2, 4. 10. 7, 2, 1, 19. 8, 3, 4, 9. 5, 2, 16. 9,  
1, 1, 32.

— समा 1) zusammenkommen, zusammen herbeikommen, sich sam-  
meln bei oder in (mit acc. und loc.); zusammen aufsuchen; mit Jmd  
(instr. oder instr. mit समम्) zusammenkommen, zu Jmd (acc.) treten,

hingehen: सं यमायन्ति धेनुवः RV. 5, 6, 2. समस्मे बन्धुमेपेशुः 73, 4, 7, 40, 1.  
इमां समेतं 10, 83, 33. समैतिन्दिशं मयिं AV. 3, 22, 5. 6, 102, 1. 7, 21, 1. स-  
मैतु विश्वतो भगः 50, 2, 11, 5, 11. 6, 18. 12, 3, 1. 3. 4. 40. ते ह देवाः समेत्योचुः

ÇAT. Br. 2, 1, 2, 17. 4, 2, 2, 4. 6, 2, 4. fgg. तत्र कैषां लोकानामताः समायन्ति  
6, 5, 2, 12. 7, 4, 2, 23. 8, 7, 1, 4. यथा काष्ठं च काष्ठं च समेयातां महेदधौ ।  
समेत्य च व्यपेयातां तदद्भूतसमागमः ॥ MBh. 12, 868. fg. (= R. 2, 103, 24.

Gora. 104, 12. Hit. IV, 66). यूयं समैष्यथ BHATT. 4, 6. समेत्य (subj. pl.) M.  
2, 152. 9, 104, 212. R. 1, 14, 12. 2, 67, 1. 3, 29, 26. 4, 39, 40. 5, 15, 51, 52.

ÇĀK. 18, 23. PAÑKĀT. 46, 21. 160, 5. सर्वे राजानं समेत्य 43, 14. स च तान् —  
समेयात् MBh. 3, 249. समेत्य (subj. sg.) तत्र राजानम् 14, 1477. तैः समेत्य

(subj. sg.) N. 8, 22. DBAUP. 4, 7. An. 4, 5. तेन युध्यत्व संप्रामे समेत्य MBh.  
5, 7041. तेन — समं समेत्य (subj. pl.) R. 3, 16, 41. तथा — समेयिषान्

(ehelich) 1, 77, 29. herbeikommen: समेत्य (subj. sg.) PAÑKĀT. 148, 20. समे-  
यानाः MBh. 2, 2031. partic. समेतं zusammengekommen, versammelt M.

12, 114. R. 1, 4, 13. 2, 56, 32. 3, 34, 36. 4, 30, 16. verbunden, vereinigt: ए-  
कार्ये समेतौ DBAUP. 3, 14. mit Jmd (acc.) zusammengekommen: भगवत्तं

महोदधेवं समेतौ ऽस्मि An. 4, 3. feindlich (mit dem instr.): त्वाम् — समेतं  
भीमद्वेषणा रत्तसा Hip. 4, 42. mit Jmd oder Etwas (instr. oder geht im

comp. voran) verbunden, vereinigt, versehen mit: दिष्ट्या समेतो दारैः स्वै-  
र्भवान् N. 26, 7. मया समेतौ MBh. 3, 10262. पतसि नरकमध्ये पुत्रयोत्रिः स-  
मेतः MĀKĀH. 156, 6. PAÑKĀT. I, 29. मूयक्रोस्वत्समेतो भतियप्यामि 136, 6.

50, 12. ताम्रपर्णसमेतस्य — महोदधेः des Oceans, wo er sich mit der T.  
vereinigt, RAGH. 4, 50. शक्तिसमेतं PAÑKĀT. I, 388. अद्वा ० 438. — 2) betre-

ten: समेयादिषमं नगैर्निलाद्यं समहीधरम् । सममश्चैर्निलं नैभिः सर्वत्रैव प-

दातिभिः ॥ Hit. III, 73. — 3) es mit Jmd (acc.) aufnehmen: स्थानादपीन्द्रं  
कुपितः प्रकर्षेद्यमं समेयाद्दरुणं नियच्छेत् R. 3, 43, 42. — 4) mit caus. Bed.

(eine Verbindung) herbeiführen: तत्रस्य तत्रेन समेत्य योगम् ÇVĀTĀÇV. UP.  
6, 3. ÇĀMĀKAR.: = संगमय्य.

— अभिसमा zusammen herbeikommen, zu Jmd (acc.) vereinigt hin-  
kommen; aufsuchen: ब्राह्मणा अभिसमेता कभूवुः hatten sich versammelt

ÇAT. Br. 14, 6, 1, 1 (= BṚH. ĀR. UP. 3, 1, 1). अथैनमेते प्राणा अभिसमायन्ति  
7, 2, 1 (= BṚH. 4, 4, 1). तद्यथा राजानं प्रिययासत्तनुयाः प्रत्येनसः सूतग्राम-

एषो ऽभिसमायत्येवमेवेममात्मानमत्तकाले सर्वे प्राणा अभिसमायन्ति BṚH. ĀR.  
UP. 4, 3, 38. तं ह्यभिसमेत्योचुः KHAND. UP. 5, 1, 12. एव मामभि ते मनः स-

मैतु AV. 6, 102, 1. Hierher dürfte vielleicht auch gezogen werden: आ  
विश्वतो अभि समेतु RV. 6, 19, 19.

— उपसमा zusammenkommen, an einem Orte oder mit Jmd (acc.)  
zusammentreffen: ते ह पापं वदत उपसमेयुः ÇAT. Br. 3, 4, 2, 5. 4, 6, 6, 3.

fgg. ते ऽप उपस्युष्यामीधमपसमायन्ति 3, 9, 2, 1. 4, 4, 5, 2. 11, 8, 2, 2. 13, 4,  
1, 4, 2, 3. 14, 7, 1, 44. तमध्ये स्थान उपसमेत्योचुः KHAND. UP. 1, 12, 2.

— उद् 1) hinaufgehen: उदकमुच्चैत्यव चारुभिः RV. 1, 164, 51. त्रिपा-  
हूर्ध उदैतु 10, 90, 4. 27, 15. येन देवा ज्योतिषा ह्यामूदायन् AV. 11, 1, 37.

18, 2, 47. VS. 11, 69. मुहूर्ते पशियः प्राप्तश्चादयत्तीह (zum Altar) पानकाः  
MBh. 14, 2615. voraufgehen: उदैति प्राङ्शिषो पतिः AV. 3, 4, 1. — 2) aufge-

hen (von allen Gestirnen): उदैति सूर्यः RV. 1, 157, 1. 163, 1. 191, 8. सूर्य उद्यति  
8, 27, 19. VS. 10, 16. अमी क्षुत्तराहि सप्तर्षय उद्यन्ति ÇAT. Br. 2, 1, 2, 4. 1,

6, 4, 14. 4, 2, 1, 2. 6, 5, 5. उद्यत्तमादित्यम् M. 4, 37. MBh. 1, 6533. 3, 11847.

R. 3, 6, 12. BHATT. 6, 110. उद्यत्येष सूर्यः PRAÇNOR. 1, 8. स एषः — अग्निरुद-  
यते 9. आदित्य उद्यन् 7. उद्यत्तं दिनकारम् R. 3, 12, 4. चन्द्रेणोदयता 4, 8,

43. शीतोष्णम् — उद्यत्तम् 5, 11, 4. उद्यति हि शशाङ्कः MĀKĀH. 23, 24. अ-  
त्रोदयति (vgl. 14, 781, wo उपयति gelesen wird) च । सप्त देवर्षयः MBh.

3, 11855. उद्यत् die aufsteigende Sonne (bis Mittag) BṚH. ĀR. UP. 1, 1, 1.  
pass. impers.: इन्द्रोदीयते BHATT. 18, 20. उदैयत 8, 35. partic. उदैति RV.

3, 15, 2. 10, 121, 6. M. 2, 15 (उदैति ऽनुदैते चैव, sc. सूर्ये). 3, 280. Siv. 4,  
10. INDR. 2, 27. R. 1, 7, 18. प्रथमोदैति KHAND. UP. 2, 9, 4. पुरा सूर्यस्वेदितोः

ved. P. 3, 4, 16, Sch. aufziehen (von Wolken): उद्यत्तु नाम मेघाः MĀKĀH.  
73, 6. मेघमिवोद्यत्तम् R. 4, 43, 38. — 3) hinausgehen, herausgehen; her-

vorgehen, erstehen; entkommen: पतं उ अयात्तु उदैपुरा विशम् RV. 2, 24,  
6. ततो ह मान् उदैयाय मध्यात् 7, 33, 13. यथा नातः पुनरुदीयनादयत् 104,

3. उदैयायः (अद्भ्यः) प्राचिरा पून ह्यैमि 10, 17, 10. 108, 11. 27, 23. AV. 6,  
76, 1, 2. 8, 2, 8. vom Schall: उद्भयानो जयन्तो यत्तु घोषाः RV. 10, 103, 10.

AV. 3, 19, 6. — ÇAT. Br. 2, 2, 4, 6. आयो धन्व इभ्य उदायन् 7, 2, 2, 2. 12,  
1, 4, 3. 2, 4, 16. यथाग्नेधूम उद्यत एवमेयाम्भोदयते 6, 2, 1, 5. स्वयमुदितं

(entstanden) नवनीतम् 5, 3, 2, 6. स एष संभ्यः पाप्यभ्य उदित उदिति  
(macht sich frei von) ह वै सर्वेभ्यः पाप्यभ्यो य एवं वेद KHAND. UP. 1, 6,

7. उदैव तत इत्यग्रेदा ह भवति 3, 16, 2. — पायः कृशानोर्हृदियाय धूमः  
RAGH. 7, 23, 48 (ed. Calc.). वत्सेश्वरात्युनरुदय्यातं चक्रवर्ती KATHĀS. 26,

280. न प्रभातरत्वं ज्योतिरुदिति वसुधातलात् ÇĀK. 23. उदैति पूर्वं कुमुदं ततः  
पलम् 189. यस्माद्दिशमेदिति PRAB. 107, 18. मोक्षः को ऽयमेका महानुदयते

91, 10. उदैवेदन्यवधूनिपेयः NAISH. 3, 92. उदितभ्रियम् RAGH. 1, 93. उदैति  
partic. NAISH. 6, 52. — 4) aufbrechen, sich zum Kampf erheben: मो चो-

द्यत्तं समासद्य R. 4, 38, 12. संयुगे सायुगीनं तनुद्यत्तं प्रसहेत कः KUMĀRAS.